४५८३

॥ अथ जैन स्तवन संग्रह प्रारंभ ॥

॥ अथ चोवीसजिन स्तवन लिख्यते ॥

प्रह्समें भाव धरी घणों, प्रणमु मनरे आणंदा ॥ धन वेला ते घडी, निरखुं प्रभु मुख चंदा ॥ प्र० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव भला, अभिनंदन वंदुं ॥ सुमति पद्मप्रभ जिनवरा, श्रीसुपार्श्व जिणंदा ॥ प्र० ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ सुविधि नमु, सीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल प्रभु, अनंत धर्म जिणंदा ॥ प्र० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर जिनवरा, ए त्रण चक्री कहीजें ॥ मल्ली मुनिसुव्रत प्रभु, नमि नेम जिणंदा ॥ प्र० ॥ ॥ ४ ॥ पार्श्व वीर नित वंदिए, एहवा जिन चोवीश ॥ ज्ञानविमल सूरि प्रणमतां, भिन होए जगीश ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ स्तवन ॥

चिंतामणि चिंता सवि चूरे, पूरे मनकी आशारे ॥ भाव भक्तिशुं जे नर ध्यावे, पावे शिव सुख वासारे ॥ १ ॥ चिंतामणि चिंता सबी चूरे

॥ पूरे० ॥ ओर देव सब दूर कीएहें, प्रभु गुनका में प्यासारे ॥ दिलभर दरिसण द्यो प्रभु प्यारे, दोह्गग दूर दूला सारे ॥ चिं० ॥ २ ॥ प्रभुजीशुं मेरो चित चाहे, चकवा दिनकर जैसारे ॥ चरण कमलकी गंध सुगंधें, मुझ मन भ्रमरा वैसारे ॥ चिं० ॥ ३ ॥ जिन मुख वाणी गंग तरंगें, पाप पंकका नासारे ॥ देखतहिं मन विकसित होवे, एहि अजब तमासारे ॥ चिं० ॥ ४ ॥ पास जिनेसर पल न विसारुं, जबलग तनमे सासारे ॥ ग्यानमहोदय चरण सरोजें, करुणोदधी हे दासारे ॥ चिं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभजिन स्तवन लिख्यते ॥

जीरे सफल दिवस आज माहरो, दीठो प्रभुनो देदार ॥ लयलागी जिनजी थकी, प्रगटयो प्रेम अपार ॥ घडी एक विसरो नहिं साहिबा, साहिबा घणो रे सनेह ॥ अंतरजामी गे माहरा, मरुदेवीना नंद॥ घ० ॥ १ ॥ जीरे लघु थइनें मनडुं रही, प्रभु सेवान काज ॥ ते दिन क्यारे आवसे, शिव सुखना दातार ॥ घ०॥२॥ जीरे प्राणेसर प्रभुजी तुमें, आतमना आधार

॥ माह्यारे मन प्रभु तुमे एकछो, जाणजो जगदा
धार ॥ घ० ॥ ३ ॥ जीरे एक घडी प्रभु तुम
विना, जाए वरस समान ॥ प्रेम विरह तुऊ कि
म खमुं. जाणो वचन प्रमाण ॥ घ० ॥ ४ ॥ जी
रे अंतर गतनी वातडी, कहो केने कहेवाय ॥
वालेसर विसवासीनें, कहेतां दुःख जाय ॥ घ०
॥ ५ ॥ जीरे देव अनेक जग मांहेछे, तेहनी नी
त अनेक ॥ तुऊविना अवरनें नही नमुं, एवी
मुऊ मन टेक ॥ घ० ॥ ६ ॥ जीरे पंम्ति विवेक
विजय तणो, नमे शुभ मन भाय ॥ हरष विज
य श्रीऋपभना, जुगतें गुण गाय ॥ घ० ॥७॥

॥ अथ महावीरजिन स्तवन लिख्यते ॥

सिद्धारथना रे नंदन वीनवुं, वीनतडी अव
धार ॥ भवमंरूपमां रे नाटक नाचिउ, हिवे मुऊ
पार उतार ॥ सिद्धारथ० ॥ १ ॥ त्रण रतन मुऊ
आपो तातजी, जिम नावे संताप ॥ दान देअं
तां रे प्रभुजी कसुर किसी, आपो पदवी रे आ
प ॥ सिद्धारथ० ॥ २ ॥ चरण अंगुठे रे मेरू कं
पाविउ, सुरनुंमोडयुं रे मान ॥ अष्टकर्मनुं रे ऊ
गडो जीतिउ, दीधुं वरसी दान ॥ सिद्धा० ॥३॥

शासन नायक शिवसुख दायक, त्रिशला कूखें रतन्न ॥ सिद्धारथनोरे वंश दीपाविउ, प्रनुजी तुमें धन्य धन्य ॥ " साहेबजी तुमे धन धन " ॥ सि० ॥ ४ ॥ वाचक सेखर कीर्तिविजय गुरु, पामी तास पसाय ॥ धर्म तणाएरे जिन चोवीशना, विनय विजय गुणगाय ॥सि०॥५॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवन लिख्यते ॥

ते दिन क्यारे आवशे, श्रीसिद्धाचल जाशुं ॥ ऋषन्न जिणंद जोहारीनें, सुरज कुंममां नाशुं ॥ ते० ॥ १ ॥ समवसरणमां बेसीनें. जिनघरनी वाणी ॥ सांजलशुं साचे मनें, परमारथ जाणी ॥ ते० ॥ २ ॥ समकित व्रत सूधा धरी, सद्गुरुने वंदी ॥ पाप सरवे आलोइनें, निज आतम निंदी ॥ ते० ॥ ३ ॥ पडिकमणा दोए टंकना, करशुं मन कोडें ॥ विषय कषाय वीसारीनें, तप करशुं होमें ॥ ते० ॥ ४ ॥ वालानें वैरी विचें, नवि करवो वेहेरो ॥ परना अवगुण देखीनें, नवि करवो चेहेरो ॥ ते० ॥ ५ ॥ धरम थानक धन वावरी, बकायनें हेतें ॥ पंच महाव्रत लेइनें, पालशुं मन प्रीतें ॥ ते० ॥ ६ ॥ कायानी माया

मेलीने, परीसहने सहेशुं ॥ सुख दुःख सघाला वीमारीनें, समभावें रहेशुं ॥ ते० ॥ ७ ॥ अरिहंत देवनें उलखी, गुण तेहना गाशुं ॥ उदयरतन इम वीनवे, क्यारे निरमल थाशुं ॥ते०॥८॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवन लिख्यते ॥

शांति प्रभु वीनती एक मोरी रे, तारी आंखडी कामण गारी ॥ शांति० ॥ विश्वसेन राजा तुज तायरे, राणी अचिरादेवी मायरे ॥ तुंतो गजपुर नगरीनो राय ॥ शां० ॥ १ ॥ प्रभु सोवन कांती बिराजेरे, मुकुटे हीरा मणी गाजेरे ॥ तारी वाणी गंगापूर गाजे ॥ शां० ॥ २ ॥ प्रभु चालीस धनुषनी कायारे, भवि जनना दिलमां भायारे ॥ कांई राज राजेसर राया ॥ शां० ॥ ३ ॥ प्रभु माहारागे अंतर जामीरे, करूं वीनती हुं शिर नामीरे ॥ चउद राजनागे तुमे स्वामी ॥ शां० ॥ ४ ॥ प्रभु परषदा बारे मांहेरे, दीए देशना अधिक उछांहेरे ॥ प्रभु अंगी एं भेट्या उमांहें ॥ शां० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका बहु पुण्यवंतारे, शुभ करणी करे महंतारे ॥ शांतिनाथना दरिशण करंता ॥ शां० ॥ ६ ॥ संवत अठार अ

ठ्याणुंन सागरे, मास कल्प करयो तेणी वाररे ॥
सूरि मुक्तिपदना धार ॥ शां० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन लिख्यते ॥

सिद्धाचल गिरि नेट्यारे, धन्य नाग्य हमारा ॥विमलाचल गिरि नेटया रे, धन्य नाग्य हमारा ॥ ए गिरिवरनो महीमा मोटो, कहेतां नावेपार ॥ रायण रूख समोसरया स्वामी, पूरव नवाणुरे वाररे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूल नायक श्रीआदि जिनेस्वर, चौमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यशुं पूजो नावें, समकेत मूल आधाररे ॥ ध० ॥ २ ॥ नाव नक्ति शुं प्रनुगुण गावे, आपणा जनम सधारया ॥ यात्रा करी नवि जन शुन नावें, निरय तिर्यंच गती वारयारे ॥ ध०॥ ३ ॥ दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवण सुणी गुण तारा ॥ पतीत उद्धारण बिरूद तुमारो, ए तीरथ जग साराटे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अठार व्यासीए मास आशाढें, वादि आठम नोम वारा ॥ प्रनुजी के चरणे प्रतापके संघमे, खेम रतन प्रनु प्याराटे ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ केसरियाजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

प्रथम तीर्थंकर ऋषन जिणंदा, नानिराया

मरुदेवीको नंदा ॥ सो शामला गुणवंता ॥ ला
ख चोराशी पूर्वनो आयु, धनुष पांचशे सोवनम
य काया ॥ सो० ॥ १ ॥ जुगलारे धर्म निवार
ण स्वामी, नगर धूलेवोवशे घण नामी ॥ सो०
॥ तखतेरे बेठा केसरीजजी सोहे. दरिसण देखी
ने मनडो मोहे ॥ सो० ॥ २ ॥ मुखडुं सोहे पु
नम केरो चंदा ॥ सुर नर मुनिवर सेवे वृंदा ॥
सो० ॥ मुकुट कुंडल शिर छत्र बिराजे, ठकुराई
केशरीआने गाजे ॥ सो० ॥ ३ ॥ देशदेसना सं
घज आवे, वस्तु अमुलक नेटणुं लावे ॥ सो० ॥
पूजा नणावे ने अंगी रचावे, केसरकेरा कीच
मचावे ॥ सो० ॥ ४ ॥ अगरबतीना धूप करावे,
फूलडा केरा मुगुट नरावे ॥ सो० ॥ नाटक ना
चेने नावना नावे, हरखें केशरीआना गुण गा
वे ॥ सो० ॥ ५ ॥ जिहाज तारे वालो बेभीज का
पे. मुह मांग्या वंछित सुख आपे ॥ सो० ॥ रोग
सोग नय दूर निवारे, नव सायरथी सेहेजें ता
रे ॥ सो० ॥ ६ ॥ जे कोई गासे ने जे सांनलशे,
तेहना मनना मनोरथ फलशे ॥ सो० ॥ कपुर
कहे तुमे प्रत्यक्ष देवा, नवो नव मागुं हुं तुम

पायसेवा ॥ सो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शीतलजिन स्तवन लिख्यते ॥

शीतल जिनवर सांभलोरे, गुणनिधि गरीब निवाज ॥ देखी दरिसण ताहरोरे, सफल थयो दिन आज ॥ शी० ॥ १ ॥ सूरत ताहरी सोहाम णीरे, लाल अमूलक नंग ॥ जाणीयें कल्पद्रुम सा रखीरे, कीधी प्रीत अभंग ॥ शी० ॥ २ ॥ हेजा ले नयणें करीरे, मिलजो मुजने स्वाम ॥ अंतर जामीछो माहरारे, भव दुःख भंजण ठाम ॥ शी० ॥ ३ ॥ साचो साजन तुं मिल्योरे, प्रीत कीधी पर माण ॥ हीअडे भीतर तुं वस्योरे, भावे जाण म जाण ॥ शी० ॥ ४ ॥ धरणी तलमां जोवतांरे अ वर मिल्या मुज लाख ॥ पणते हुं नहीं आदरुंरे, श्रीप रमेश्वर साख ॥ शी० ॥ ५ ॥ सीताने मन रामजीरे, राधाने मन कान ॥ भमरो मालती फूलडेरे, तेम प्रभुशुं मुज तान ॥ शी० ॥ ६ ॥ रोयणीने मन चंदलोरे, जिम मोरा मन मेह ॥ इंद्राणीने मन इं दलोरे, तिम प्रभुशुं मुज नेह ॥ शी० ॥ ७ ॥ अ मने तुमारोछे आसरोरे, नइ कोई बीजाशुं वाद ॥ साचो सेवक जाणसोरे, तो सवि पूरसो लाड

॥ शी० ॥ ८ ॥ अंचल गछने देहरे, मुंदरा नगर मझार ॥ महीमा वंतमया करो रे, भव दुःखभंजण हार ॥ शी० ॥ ९ ॥ सानिध कारीगे साहेबारे, प्रणम्या पातिक जाय ॥ सेहेज सुंदर गुरुरायनुंरे, नित्य लाभ प्रभु गुण गाय ॥ शी० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभजिन स्तवन लिख्यते ॥

जयो जयो नायक जग गुरुरे, आदेसर जिन राय ॥ तुज मुख देखी साहेबा, मुज आनंद अंगन माय ॥ ऋषभदेव तुं मोरो महाराज, ताहारो दर्शन दीठो में आज, प्रभु मुझ सीधा वंछित काज ॥ ऋ० ॥ १ ॥ आंखडी कमलनी पांखडी रे, जाणीयें अमीरस कंद ॥ दिन दिन मुखडूं दीपतो, जाणे नयन चकोरा चंद ॥ ऋ० ॥ २ ॥ मूरति जिनजीनी सोहनी रे, साची मोहन वेल ॥ मनना मनोरथ पूरती, जाणे कलपतरुनी वेल ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ एकण जीभे ताहेरारे, गुणकेतां न कहेवाय ॥ जिम गंगारज कण तणी, कहो केणी परें संख्या थाय ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ शेत्रुंजा गिरिनो राजियोरे, नाभीराया कुलचंद ॥ केसरविमल इम वीनवे, प्रभु द्यो दर्शण सुखकंद ॥ ऋ० ॥ ५ ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन लिख्यते ॥

धन धन खेत्र माहाविदेहजी, धन पुंडरिगि
णि गाम ॥ धन तेहना मानवी जी, नित्य उठी
करे रे प्रणाम ॥ सीमंधर स्वामी कइयेंरे, हुं महा
विदेह आवीश, जयवंता जिनवर कइयेंरे, हुं तु
मने वांदीश ॥ १ ॥ चांदलीआ संदेसमो जी,
केहेजो सीमंधर स्वाम ॥ भरत क्षेत्रना मानवी
जी, नित्य उठी करेरे प्रणाम ॥ सी० ॥ २॥ स
मोवसरण देवें रच्यो तिहां, चोशठ इंद्र नरेश
॥ सोनातणे सिंहासण बेठा, चामर छत्र धरेस
॥ सी० ॥ ३ ॥ इंद्राणी काढे गहूंली जी, मोती
ना चोक पूरेश ॥ लली लली लीयें लुंछणाजी,
जिनवर दीए उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एहवे स
मे में सांभल्यो जी, हिवे करवा पच्चखाण ॥ पो
थी ठवणी तिहां कणे जी, अमृत वाणी वखाण
॥ सी० ॥ ५ ॥ रायने वाला घोडला जी, वेपा
रीने वाला छे दाम ॥ अमने वाला सीमंधर स्वा
मी, जिम सीताने श्रीराम ॥ सी० ॥ ६ ॥ नही
मागुं प्रभु राज ऋद्धि जी, नही मागुं ग्रंथ भं
भार ॥ हुं मागुं प्रभु एटलो जी, तुम पासें अव

तार ॥ सी० ॥ ७ ॥ दैव न दीधी पांखडी जी, किम करी आवुं रे हजूर ॥ मुजरो मारो मानजो जी, प्रह उगमते सूर ॥ सी० ॥ ८ ॥ समय सुं दरनी विनति जी, मानजो वारंवार ॥ बेकर जोडी वीनवुं जी, वीनतडी अवधार ॥ सी० ॥ ९ ॥

॥ अथ राणगपुरानु स्तवन लिख्यते ॥

जगपति जयो जयो ऋषन्न जिणंद, धरणा साहें धन खरचीउ ॥ जगपति प्रोढ कराव्यो प्रासाद, उलठ नर सुरनर अरिचिउ ॥ १ ॥ जगपति नावशुं मांडें वाद, सोवन कलशें जल हले ॥ जगपाति चोबारो चोशाल, पेखंतां पातिक गले ॥ २ ॥ जगपति अति सुंदर उद्दाम, नलिनी गुल्म विमानश्यो ॥ जगपति उत्तम पुण्य अंबार, निरूपम धनद निधानश्यो ॥ ३ ॥ जगपति उलें उलें थंन्न, कीधी अनोपम कोरणी ॥ जगपति करति नाटारंन्न, पुतलीउ चित्त चोरणी ॥ ॥ ४ ॥ जगपाति नान्नीनरेसर नंद, राणक पुरनो राजीउ ॥ जगपाति सहु रायां सिरदार, जग मांहें जस गाजीउ ॥ ५ ॥ जगपति देव तुं दीन दयाल, नक्त वत्सल नलें नेटीउ ॥ जगप-

ति देखतां तुज देदार, मोह तणो मद मेटीउ ॥
॥ ६ ॥ जगपति उदय रतन उवझाय, संवत
सत्तर त्राणु समें ॥ जगपति फागणवदि पडवेरे
दिन्न, सादडी संघ सहीत नमे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवन लिख्यते ॥

मन मोहन मल्ली नाथको, जस बोलेंगे ॥
शिव रमणीको रंग, घुंगट पट खोलेंगे ॥ मो-
ह्यो मन घन मोरज्युं ॥ जस० ॥ अब औरन
चाहुं संग ॥ घु ० ॥ १ ॥ चिंतामणीकूं पाइके ॥
ज० ॥ कूण राचे काचे काच ॥ घुं० ॥ को चा-
हे खर केल्लिकूं ॥ ज ० ॥ तजी सुर कुमारिको
नाच ॥ घुं० ॥ २ ॥ बाउलकूं सेवे नहीं ॥ ज० ॥
॥ तजी मधुकर मालती फूल ॥ घुं ० ॥ कोमल
सज्या छोरके ॥ ज ० ॥ कुण बैठे धरिके सूल ॥
घुं० ॥ ३ ॥ प्रभुकी मूरति मेरे मनवसी ॥ ज० ॥
॥ सोतो विसराइ विसरैन ॥ घुं० ॥ परसन प्र-
भु मुख देखके ॥ ज० ॥ हम पावन कीने नैन
॥ घुं०॥४॥ जनम कृतारथ में करयो ॥ ज० ॥ जब
पायो औसो इस ॥ घुं०॥ विमल विजय उवझायको
॥ ज० ॥ इम राम कहे शुभ शीश ॥ घुं० ॥ ५ ॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकुरनुं स्तवन लिख्यते ॥

रिसह जिणेसर प्रणमा पाय, बीजा अजित जिणेसर राय ॥ संभव स्वामी सुख भंमार, अभिनंदन नामे जयकार ॥ १ ॥ सुमति पद्म प्रभु देव सुपास, चंद्रप्रभ जिन पूरे आस ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिणंद, वासुपूज्य दीठे आणंद ॥ १ ॥ विमल अनंत धर्म जगदीश, शांति कुंथु अर नामुं शीश ॥ मल्लिनाथ मुनिसुव्रत देव, नमि नेमीश्वर सारे सेव ॥ ३ ॥ पास वीर नित्य प्रणमे जेह, ऋद्धि सिद्धि नर पामे तेह ॥ चोवीशे गुण तणा निवास, भाव मुनि कहे पूरो आस ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवन लिख्यते ॥

शांतिजिनेसर साहेब वंदो, अनुभव रसनो कंदो रे ॥ मुखने मटके लोचन लटके, मोह्या सुर नर इंदो रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ आंबे मंजरी कोयल टउंके, मेघ घटा जिम मोरो रे ॥ तिम जिनवरने देखी हरखुं, वली जिम चंद चकोरो रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ जिनप्रतिमा श्री जिनवर भाखी, सूत्र घणाछे साखी रे ॥ सुर

नर मुनिवर वंदन पूजा, करता शिव अभि-
लाखा रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ रायपसेणी प्रतिमा
पूजी, सूरियाभ समकेत धारीरे ॥ जीवाभिगमे
प्रतिमा पूजी, विजयदेव अधिकारीरे ॥ शांति०
॥ ४ ॥ जिनवर बिंब विना नवी वंदु, आणंद
जी ईम बोलेरे ॥ सातमे अंगे समकित मूलें,
अवर नही तस तोलेरे ॥ शांति० ॥ ५ ॥ ज्ञाता
सूत्रें द्रौपदी पूजा, करति शिवसुख मागेरे ॥ रा
य सीधारथ प्रतिमा पूजी, कल्पसूत्र मांहे रागेरे
॥ शांति० ॥ ६ ॥ विद्याचारण मुनिवर वंदी, प्र
तिमा पांचमें अंगेरे ॥ जंघाचारण मुनिवर वंदी,
जिन पडिमा मन रंगेरे ॥ शांति० ॥ ७ ॥ आर्य
सुहस्ति सुरि उपदेशें, चावो संप्रतिरायरे ॥ सवा
कोडी जिनबिंब भराव्या, धन धन एहनी मायरे
॥ शांति० ॥ ८ ॥ मोकली प्रतिमा अभय कुमारें,
देखी आद्रकुमाररे ॥ जातिस्मरणे समकित पा
मी, वरियो शिववधु साररे ॥ शांति० ॥ ९ ॥ इ
त्यादिक बहु पाठ कह्यांछे, सूत्र मांहे सुखकारीरे
॥ सूत्रतणो एक वरण उछापे, ते कह्यो बहुल सं
सारीरे ॥ शांति० ॥१०॥ तेमाटे जिन आणा धा

री, कुमति कदाग्रह निवारीरे ॥ भक्ति तणा फल उत्तराध्ययने, बोध बीज सुखकारीरे ॥ शांति० ॥ ॥११॥ एक भवें दोय पदवी पाम्या, शोलमां श्री जिन रायरे ॥ मुजमनमंदिरीयें पधरावो, धवल मंगल गवरायरे ॥ शांति० ॥१२॥ जिन उत्तमप द रूप अनोपम, कीर्ति कमलानी शालारे ॥ जिनविजय कहे प्रभुनी भक्ति, करतां मंगल मालारे ॥ शांति० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥अथ वीरजिन चवदसुपननो स्तवन लिख्यते॥

रायरे सिद्धारथ घर पटराणी, नामे त्रिशला सुलक्षणी ए ॥ राज भुवन मांहे पलंगें पोढंता, चउदसुपन राणीयें लह्याए ॥ १ ॥ पहेलेरे सुप नमे गयवर दीठो, बीजे वृषभ सोहामणोए ॥ त्रीजे सिंह सुलक्षणो दीठो, चोथे लखमी देव ताए ॥ २ ॥ पांचमे पांच वरणनी माला, छठे चंद्र अमीय झरेए ॥ सातमे सूरज आठमे ध्व ज।, नवमें कलस अमीय भरयोए ॥ ३ ॥ पद्म सरोवर दशमें दीठो, क्षीर समुद्र दीठो इग्यार मेए ॥ देव विमानते बारमे दीठो, रणझण घंटा वाजताए ॥ ४ ॥ रतननीरासुंते तेरमे दीठ्युं, अ

ग्नि शिखा दीठी चउदमेए ॥ चउद सुपन लई राणीजी जाग्यां, राय समोवरू पोतलाए ॥ ५॥ सुणारे स्वामी मेतो सुहणाला लाधा, पाछली रात रलीयामणीए ॥ रायरे सिद्धारथ पंडित तेड्या, कहोरे पंडित फल एहनुंए ॥ ६ ॥ अम कुल मंमण तुम कुलदीवो, धनरे महावीर स्वामी अवतरयाए ॥ जे नर गावे ते सुखपावे, आनंद रंग वधामणाए ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवने समता शिखामण स्तवन ॥

हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अती ऊंडो मरम विचारीयें, हांरे तुमे कुमतीके घर जावोगे, तुमे कुलमा खोट लगावोगे ॥ धिग एठ जगतनी खावोगे ॥ हो० ॥ १ ॥ अमृत त्यागी विष पिवोगे, कुमतीनो मारग लीयोगे ॥ एतो काज आयुक्तो कीयोगे ॥ हो० ॥ २ ॥ एतो मोह रायकी चेटीछे ॥ शिव संपत्ति एहथी छेटीछे ॥ एतो साकर गलती पेटीछे ॥ हो० ॥ ३ ॥ एक संका मेरे मन आवीछे ॥ किसि विध ए चित्त भावीछे ॥ एतो दाहण जगमां चावीछे ॥ हो० ॥ ४॥

सहु ऋद्धि तुमारी खाएछे ॥ करी कामण चित्त ज्ञरमाए छे ॥ तुम पुण्य योगे ए पाएछे ॥ हो०॥ ॥ ५ ॥ मत आंब काज बाउल लेवो ॥ अनोपम ज्ञव विरथा नवी खोवो ॥ अब खोल नयण प्रगट जोवो ॥ हो० ॥ ६ ॥ इणविध समता बहु समजाए ॥ गुण अवगुण कइ सहु दरसाए ॥ सुणी चिदानंद निज घर आए ॥ हो०॥७॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन लिख्यते ॥

जीरे आज दिवस ज्ञले उगीयो, जीरे आज थयो सुविहाण ॥ पासजिणेसर ज्ञेटीआ, थयो आनंद कुशल कल्याणहो ॥ साजन ॥ सुखदायक जाणी सदा, ज्ञवि पूजो पास जिणंद ॥ १ ॥ए आंकणी ॥ जीरे त्रिकरण सुद्धियें त्रिहुं समे, जीरे निसिही त्रण संज्ञार, त्रिहुं दिशि निरखण वरजीनें ॥ दीजें खमासमण त्रणवार हो ॥ साजन ॥ २ ॥ जीरे चैत्य वंदन चोवीसनो, जीरे स्वरपद वर्ण विस्तार ॥ अर्थ चिंतन त्रिहुं कालना, जिन नाथ निक्षेपा चारहो ॥ साजन० ॥सु०॥३॥ जीरे श्रीजिन पद फरसे लहे, कलि मलीनते पदकल्याण ॥ तेवलि अजर अमर हुवे, अपुनर्ज्ञ

व शुन नीर्वाण हो ॥ सा० ॥ ४ ॥ जीरे लोह
ज्ञाव मूकी परो ॥ जीरे पारश फरस पसाय ॥
थाए कल्याण कुधातुथी, तिम जिनपद मोक्ष
उपाय हो ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीरे उत्तम नारी न
र घणा, जीरे मनधरी ज्ञक्ति उदार ॥ आराधी
जिनपद ज्ञलो, थाए जिन करे जग उपगार हो
॥ सा० ॥ ६ ॥ जीरे एहवो मन निश्चय करी,
जीरे निंसिदिन प्रज्ञुने ध्याय ॥ पामें सौज्ञाग्य
स्वरूपनें, निवृत्ति कमलावर थाय हो ॥ सा० ॥७॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवन लिख्यते ॥

शांति जिनेसर साहिबा रे, शांतितणो दाता
र ॥ सलूणा ॥ अंतर जामी छो महारारे, आत
मना आधार ॥ स० ॥ शांति० ॥ १ ॥ चित चा
हे प्रज्ञु चाकरीरे, मनचाहे मिलवाने काज ॥स०
॥ नयण चाहे प्रज्ञु निरखवारे, द्यो दरिसण म
हाराज ॥ स० ॥ शांति० ॥ २ ॥ पलक न वी
सरूं मन थकी रे, जिम मोरा मन मेह ॥ स०
॥ एक पखो किम राखीयें रे, राज कपटनो नेह
॥ स० ॥ शांति० ॥ ३ ॥ नेह नजर निहालतां
रे, वाधे बिमणो वान ॥ स० ॥ अखूट खजानो

प्रनु ताहरो रे, दीजीयें वंछित दान ॥ स० ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आस करे जे कोई आपणीरे, नही मुकीयें नीरास ॥ स० ॥ सेवक जाणीने आपणोरे, दीजीयें तास दिलास ॥ स० ॥ शां०॥५॥ दायकने देता थकांरे, क्षण नवी लागे वार ॥ स०॥ काजसरे निज दासनारे, ए मोटो उपगार ॥ स०॥ ॥ शां० ॥ ६ ॥ एवुं जाणीने जग धणीरे, दिल मांही धरजोप्यार ॥ स० ॥ रूपविजय कविराय नोरे, मोहन जय जय कार ॥ स० ॥ शां० ॥७॥

॥ अथ वीरजिन स्तवन लिख्यते ॥

रे वंदन आयो ॥ ए आंकणी ॥ बाजत नेरी नूंगल सुर दुंदुनी, नाद सुरपति नायोरे ॥ वं०॥ ॥१॥ ऐरावण गज सप्तसूंढ सिर, कमलहि छायो ॥ कमल कमल जिन नुवन नुवन, नाटक बनायोरे वं० ॥ २ ॥ सुधर्म ईसान सनत महेंद्र, आदेश सवायो ॥ वीस नुवनपति त्रीसदोय, व्यंतर बनायोरे ॥ वं० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज दोय ज्योतिषि चोसठ, आय वीर वधायो ॥ वंदत सुरपति विध लेई, नावना नायोरे ॥ वं० ॥ ४ ॥ समोवसरण श्रीवीर जिणंद, त्रिहुं कोट रचायो ॥ देसना

सरस सुधारस देइ, नविक मन लोनायो रे ॥ वं० ॥ ५ ॥ इत नरपति दसार्णनद्र नड, तेज सवायो ॥ देखत सुर रिद्धि मान नेमी, संजम पायो रे ॥ वं० ॥ ६ ॥ धन धन शासन जैन धर्म, धन वीर जिन रायो ॥ संघ सकल सुखदाय पाय, जयरामे गायो रे ॥ वं० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन स्तवन लिख्यते ॥

पुक्कलवई विजयें जयो रे, नयरी पुंडरि गिणिसार ॥ श्रीसीमंधर साहेबा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय ॥ धरजो धर्म सनेह ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मोटा नाहाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ ससि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार कर दोय कुसुमें वासीयें रे, नया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय रंक सरीखा गणे रे, उद्योतें ससि सूर ॥ गंगाजल तें बिहु तणोरे, ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवारे, तिम तुम नो महाराज ॥ मुजसुं अंतर किम करोरे, बाहि ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे

रे, ते नवी होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवी तणोरे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि०॥६॥ वृषन्न लंछन माता सत्यकीरे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाचकजस एम वीनवे रे, न्नय न्नंजन न्नगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवन लिख्यते ॥

अजित जिणंद जुहारीयें ॥ साहेबा विजयारा णीना नंद ॥ जिणंद मोराहे ॥ सुर नर किन्नर तुम तणा, साहेबा सेवे पय अरविंद ॥ जिण० ॥ अजि० ॥ १ ॥ जितशत्रु नृप लाडलो ॥ सा० ॥ जितशत्रु न्नगवान ॥ जि० ॥ जीतशत्रु मुज कीजीयें ॥ सा० ॥ दीजीयें वंछित दान ॥ जि० ॥ अजि० ॥ २ ॥ अंतराय पंचक टल्यो ॥ सा० ॥ हास्य छक्क अज्ञान ॥ जि०॥ अबिरति काम निद्रा तजी ॥ सा०॥ तेम राग द्वेष अंतवान ॥ जि० ॥ अजि० ॥३॥ मिथ्यात्व दोष अठार ए ॥ सा०॥ त्यजी करवो तुम गुण संग ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान बिराजता ॥ सा० ॥ सादि अनंत अन्नंग ॥ जि० ॥ ४ ॥ तुं सकल परमेश्वरू ॥ सा० ॥ तुं निज शिव पद न्नूप ॥ जि० ॥ तुम पद पद्मनी चाकरी ॥ सा० ॥ चाहे चित्त नित्य रूप ॥ जि०॥५॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति स्तवन लिख्यते ॥

श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, गिरिवर मांहें जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणुं, तारा मांहे जेम चंद्र वखाणुं, जलधर मांहे जल जाणुं ॥ पंखीमांहे जेम उत्तम हंस, कुल मांहे जेम ऋषभनो वंश, नाभि तणो जे अंश ॥ क्षमावंत मांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्मप्रभ सुख कंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि, शीतल श्रेयांस सेवो बहुबुद्धि, वासुपूज्य मति सुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथि ॥ नमी पासने वीर चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्ध गिरि आव्या इश ॥ २ ॥ भरतराय जिन साथें बोले, स्वामी शत्रुंजय गिरिकुण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ ऋषभ कहे सुणो भरत राय, छहरी पालता जे नर जाय, पातिक भुको थाय ॥ पशु पंखी जे इणगिरि आवे, भव

त्रीजेते सिद्धज थावे, अजरामर पद पावे ॥ जि
नमतमें शत्रुंजो वखाएयो, ते में आगम दिलमां
हे आएयो, सुणता सुख उर आएयो ॥ ३ ॥
संघ पति भरत नरेसर आवे, सोवन तणां प्रा
साद करावे, मणिमय मूरति ठावे ॥ नाभिराया
मरु देवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेहेन विख्याता,
मूर्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुखने चक्केसरी देवी,
शत्रुंजय सार करे नित्य सेवी, तपगछ उपर
हेवी ॥ श्रीविजयसेन सुरीश्वर राया, श्रीविजय
देवसुरि प्रणमी पाया, रिषभदास गुण गाया॥४॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ स्तवन लिख्यते ॥

सुंदर शांति जिणंदनी, छबि छाजे छे ॥ प्रभु
गंगाजलगंभीर, कीर्त्ति गाजे छे ॥ गजपुर नयर
शोहामणुं, घणुं दीपे छे ॥ विश्वसेन नरिंदनो
नंद, कंदर्प्प जीपे छे ॥ अचिरा मातायें उर ध
रयो, मन रंजे छे ॥ मृगलंछन कंचन वान, भा
वठ भंजे छे ॥ १ ॥ प्रभु लाख वरस चोथे भा
गे, व्रत लीधुं छे ॥ प्रभु पाम्या केवल ज्ञान,
कारज सीधुं छे ॥ २ ॥ धनुष चालीशनुं ईशनुं,
तनुं सोहे छे ॥ प्रभु देशना ध्वनि वरसंत, भ

वि पडिञोहे वे ॥ ३ ॥ नक्तवत्सल प्रनुता न
णी, जन तारे वे ॥ बूडंतां नवजलमांहि, पार
उतारे वे ॥ ४ ॥ श्री सुमति विजय गुरुनाम
थी, दुःख नासे वे ॥ कहे रामविजय निजध्या
न, नवनिधि पासेंवे ॥ ५ ॥

॥ अथ सीमंधर स्तवन लिख्यते ॥

चित्तडुं संदेशो मोकले, म्हारा वाल्हा जीरे ॥
मनडा साथेंरे नेह, जइने कहेजो म्हारा स्वा
मी जीरे ॥ सीमंधर नित्य हुं जपुं, म्हारा स्वा
मी जीरे, जेम बापईडोरे मेह ॥ ज० ॥ म० ॥
॥ १ ॥ दूर देशांतर जइ रह्या ॥ म० ॥ माया
लगाडीने हेव ॥ ज० ॥ म० ॥ पांखडी जो
म्हारे होवे ॥ म० ॥ उडी आवुं ततखेव ॥
ज० ॥ म० ॥ २ ॥ प्रीत ते अधिकी होइ गई
॥ म० ॥ हिवे केम वंडीरे जाय ॥ ज० ॥ म०
॥ उत्तम जनशुं प्रीतडी ॥ म० ॥ कदीय न उ
वीरे थाय ॥ ज० ॥ म० ॥ ३ ॥ निःस्नेही तुम
सारखा ॥ म० ॥ मेंतो कोई न दीठ ॥ ज० ॥ म० ॥
हइडामां चाहे नाहिं ॥ म० ॥ मुंडे बोले ते मीठ ॥
ज० ॥ म० ॥ ४ ॥ आशा तो तुम उपरें ॥ म०

॥ मेरु समान में कीध ॥ ज० ॥ म० ॥ जो क्षण एक कृपा करो ॥ म० ॥ तो सहु होवेरे सिद्ध ॥ ज० ॥ म० ॥ ५ ॥ जे अक्षय सुख शाश्वतां ॥ म० ॥ जे सहु चाहेरे लोक ॥ ज० ॥ म० ॥ नाहिं आपो माग्यूं थकुं ॥ म० ॥ जाणपणुं सहु फोक ॥ ज० ॥ म० ॥ ६ ॥ घणुं शुं कहियें जाणने ॥ म० ॥ देजो स्वामीरे सेव ॥ ज० ॥ म० ॥ कवि ते रूप पसायथी ॥ म० ॥ रिद्धि कहे नित्यमेव ॥ ज० ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ अथ दिवालीको स्तवन लिख्यते ॥

माहावीर स्वामी मुक्ति पोहोता, गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन दिवाली धन अमावास्या, वीरतणुं निरवाण ॥ प्रभु मुख जोवाने, महारे दिवाली थई आज ॥ प्र० ॥ मोहि मोहिरे मीठडा लाल ॥ जिन मुख जोवाने ॥ मा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चारित्र पाली निरमलुनें, टाली विषय कषायरे ॥ एवा मुनिनें वांदिए तो, उतारे भवपार ॥ प्र० ॥ मा० ॥ २ ॥ बाकुला वहोरया वीरजीने, तारी चंदन बालारे ॥ केवल लहीने मुक्तें पोहोता, पाम्या भवनोपार ॥ प्र० ॥ मा० ॥ ३ ॥ एवा देवने वां

दीयें, जे पंचम ज्ञानने धरतारे ॥ समो सरणे द
इ देशना, प्रनु तारया नरने नार ॥ प्र ०॥ मा०
॥ ४ ॥ चोवीशमो जिन जिनेसरुने, मुक्तितणो
दातार रे ॥ करजोडी कविश्रण इमन्नणे, मारे न्न
वने फेरो टाल ॥ प्र० ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषन्नजिन स्तवन लिख्यते ॥

प्रथम तीर्थकर सेवना, साहिवा उदित ऋद
य ससनेह ॥ जिणंदमोराहे ॥ प्रीत पुरातन सां
न्नरे, साहिबा रोमांचित सुचि देह ॥ जिणंद मो
राहे ॥ आदि जिणंद जुहारीयें ॥ साहिबा ऋष
न्न जिणंद जुहारीयें ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अग
म अलोकीक पंथडो, साहिबा कागल पण न लि
खाय ॥ जि० ॥ अंतर गतनी वातडी ॥ सा० ॥
जण जणने नकहाय ॥ जि० ॥ आदि० ॥ २ ॥
कोडी टकानी चाकरी ॥ सा० ॥ प्रापति विण न
लहाय ॥ जि० ॥ मनमोजी मिलवाने उमहे ॥ सा०
॥ किमकरी मेलो थाय ॥ जि० ॥ आदि० ॥ ३ ॥
दूरथका पण साजना ॥ सा० ॥ सांन्नरे नवरंग
रीत ॥ जि० ॥ पूरव पुण्ये पामीयें ॥ सा० ॥ प
रम पुरुषसुं प्रीत ॥ जि० ॥ आदि० ॥ ४ ॥ म

त मत नय नय कल्पना ॥ सा० ॥ इतरेतर प
रिमाण ॥ जि० ॥ रूप अगोचर नवी लहे ॥सा०
॥ विवाद एमहिं आण ॥ जि० ॥ आदि०॥५ ॥
शम दम शुद्ध स्वभावमां ॥ सा० ॥ प्रभु तुम रू
प अखंड ॥ जि० ॥ भक्ति वंदित संलीनता ॥
सा० ॥ एहथी प्रगट प्रचंड ॥ जि० ॥ आदि०
॥ ६ ॥ करुणा रस संयोगथी ॥ सा० ॥ दीठो न
वल देदार ॥ जि० ॥ रूपविबुध कवि राजनो ॥
सा० ॥ मोहन जय जय कार ॥जि०॥आदि०॥७॥

॥ अथ धर्मजिन स्तवन ॥ लिख्यते ॥

हां रे मारे धर्म जिणंदशुं लागी पूरण प्रीत
जो, जीवडलो ललचाणो जिनजीने ओलगे रेलो
॥ हां रे मुने थासे कोईक समयें प्रभुजी प्रसन्न
जो, वातडली तव मारी सहु थासे वगें रेलो ॥
॥१ ॥ हां रे कोई दुर्जननो भंभेरयो माहारो ना
थजो, ओलवशे नहीं क्यारे कीधी चाकरीरे लो ॥
हां रे माहरा स्वामी सरखो कुणछे दुनीयां मां हे
जो , जईयेंरे जे तेहने घर आस्या करीरे लो ॥
॥ २ ॥ हां रे जस सेव्या सेंती स्वार्थ नहोवे सि
द्धजो, ठालीरे शीकरवी तेहथी गोठडीरे लो ॥हां

रे कोइ जुठे खाए ते मीठाईने माट जो, कोइरे परमारथ विण नही परतडीरे लो ॥ ३ ॥ हां रे प्रभु अंतरजामी जीवन प्राणाधारजो, वह्युंरे न वी जाणे कलियुग वायरो रेलो ॥ हां रे माहरा नायक लायक भक्ति वछल भगवानजो, वारुरे गुणकेरो साहेब सागरुरेलो ॥ ४ ॥ हां रे प्रभु लागी मुजने ताहरी माया जोरजो, अलगारे र ह्याथी होवे उसिंगलोरे लो ॥ हां रे कुण जाणे अंतर गतनी विण माहाराजजो, हेजशुं हसी हसी बोलुं दयामणोरे लो ॥ ५ ॥ हांरे तारे मु खने मटके अटक्यो मारो मन्नजो, आखंडलीउं अणीआलीउं कामण गारीओरे लो ॥ हां रे मारा नयणा लंपट छिण छिण जोवे तुजजो, रातीरे प्र भु रूपें न रहे वारीउं रेलो ॥ ६ ॥ हां रे प्रभु अ लगा तोपण जाणजो करीने हजूरजो, ताहरीरे बलिहारी जाउं वारणे रेलो, हांरे कवी रूपविबु धनो मोहन करे अरदासजो, गिरुआथी मनआ णें ऊलट अतिघणो रेलो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्व जिन स्तवन लिख्यते ॥

रातांजेवां फूलझाने, सामल जेवोरंग ॥ आ

ज तारी अंगीनो कांइ रूडो बन्यो रंग ॥ प्यारा पासजी होलाल, दीन दयाल, मुजने नयणे निहाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जोगीवाडे जागतोने, मातो धिंगड मल्ल ॥ शामलो सोहामणोने, जीत्या आठे मल्ल ॥ प्या० ॥ २ ॥ तुंडे मारो साहिबोने, हुंतुं तारो दास ॥ आस पूरो दासनी कांई, सांभली अरदास ॥ प्या ॥ ३ ॥ देव सघला दीठा तेमां, एक तुं अवल्ल ॥ लाखेणोडे लटको ताहरो, देखी रिझे दिल्ल ॥ प्या० ॥ ४ ॥ कोइ नमे पीरनेने, कोइ नमे राम ॥ उदयरत्न कहेरे प्रभु ॥ मारे तुमशुं काम ॥ प्या० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवन लिख्यते ॥

श्रीसिद्धाचल मंडण स्वामीरे, जगजीवन अंतर जामीरे, एतो प्रणमुं हुं शिर नामी ॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करियेरे, करियें तो भव जल तरियें ॥ जात्री० ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेश्वररायारे, जिहां पूर्व नवाणुं आयारे, प्रभु समवसरया सुखदाया ॥ जात्री० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन्न वखाणुरे, पांच कोडी पुंडरिक जाणुंरे, जे पाम्या पद निरवाणुं ॥ जात्री० ॥ ३ ॥

नमि विनमि राजा सुख सातेंरे, बे कोडी साधु संघातेंरे, एतो पहोता पद लोकांतें ॥ जात्री० ॥ ४ ॥ काति पूनिमें करमने तोडीरे, जिहां सीधा मुनि दश कोडीरे, तेतो वंदो बे कर जोमी ॥ जात्री० ॥ ५ ॥ एम ज्ञरतेसरने पाटेंरे, असंख्याता मुनिवाटेंरे, पाम्या मुगति रमणी ए वाटें ॥ जात्री० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवाररे, थावर्चा सुत सुखकाररे, सयपंच सेलग अणगार ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ वली देवकी सुत सुजगीसरे, सीधा बहु जादव वंशरे, ते प्रणमुं रे मन हंस ॥ जात्री० ॥ ८ ॥ पांच पांडव इ णें गिरि आव्यारे, सीधा नव नारद ऋषि रायारे, वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥ जात्री ० ॥ ॥९ ॥ ए तीरथ महिमावंतरे, जिहां सीधा साधु अनंतरे, इमज्ञाखे श्रीज्ञगवंत॥ जात्री०॥१०॥उज्वलगिरि समो नही कोयरे, तीरथ सघला में जोयरे, जे फरस्यां पाप नहोय ॥ जात्री ० ॥ ॥ ११ ॥ एकल आहारी सचित परिहारी रे, पद चारीने ज्ञूमि संथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्म चारी ॥ जात्री० ॥ १२ ॥ एम ठहरी जे नर

पालेरे, बहुदान सुपात्रें आलेरे, ते जनम मर
ण नय टाले ॥ जात्री० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य
ते नर नारीरे, भेटे विमलाचल एक तारीरे,
जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जात्री० ॥ १४ ॥
श्रीजिनचंद्रसुरि सूपसायेंरे, जिनहर्ष होय उञ्जा
येंरे, इम विमलाचल गुण गाये॥ जात्री० ॥१५॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवन ॥ गरवानी देशीमां ॥

जइने रहेजो माहारा वालाजीरे, श्रीगिरनार
ने गोंख ॥ जइने० ॥ ए आंकणी॥ अमें पण ति
हां आवीशुं ॥ माहा० ॥ जिहारें पामीशुं जोख
॥ जइ ० ॥ १ ॥ जान लेइ जूने गढें ॥ माहा०
॥ आवी तोरण आप॥ जइ०॥ पशुआं पेखी पा
छा वल्या॥ माहा०॥ जातां न दीधो जबाब॥ ज०
॥ २ ॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ माहा० ॥ जो
तां नहीं मिले जोम ॥ जइ० ॥ बोल्या आणबो
ल्या करो ॥ माहा० ॥ ए वातें तुमने खोड ॥ज
इ० ॥ ३ ॥ हुं रागी तुं वैरागीउ ॥ माहा० ॥ज
गमां जाणे सहु कोय ॥ जइ० ॥ रागी तो लागी
रहे ॥ माहा० ॥ वैरागी रागी न होय ॥ जइ०
॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं ॥ माहा० ॥ स

घला मेहेली सबाद ॥ जइ० ॥ मोहनीयाने ज
इ मिली ॥ माहा० ॥ महोटा साथें श्यो वाद ॥ ज
इ० ॥ ५ ॥ गढतो एक गिरनार छे ॥ माहा० ॥
नर तो छे एक श्री नेम ॥ जइ० ॥ रमणी एक रा
जीमती ॥ माहा० ॥ पूरो पाळ्यो जेणें प्रेम ॥ ज
इ० ॥ ६ ॥ वाचक उदयनी वंदना ॥ माहा० ॥
मानी लेजो माहाराज ॥ जइ० ॥ नेम राजुल मुक्तें
मिल्या ॥ माहा० ॥ सार्यां आतमकाज ॥ जइ० ॥ ७ ॥

॥ अथ पंचमीनु स्तवन लिख्यते ॥

पंचमीतप तुमें करोरे प्राणी, जेम पामो नि
र्मल ज्ञानरे ॥ पहेलुं ज्ञानने पछी क्रिया, नाहिं
कोइ ज्ञान समानरे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदी
सूत्रमां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकाररे ॥
मति श्रुत अवधिने मनःपर्यव, केवल ज्ञान उ
दाररे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत
चउदह वीश, अवधिछे असंख्य प्रकाररे ॥ दो
य भेदें मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक उदाररे ॥
पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, ऐ
सो तेज आकाशरे ॥ केवल ज्ञान उद्योत भ
यो जब, लोकालोक प्रकाशरे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥

पारसनाथ प्रसाद करीने, ह्मारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो नेद रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥अथ उपदेस स्तवन ॥ राग प्रनातीमां ॥

जागेशो जिन नक्त कहावे, सोवे सो संसारी हे ॥ त्रस जीवकी हत्या नकरे, थावर करुणा कारी हे ॥ जा० ॥ १ ॥ थापण मोसो अदत्त न लेवे, चोरी मारी वारीहे ॥ पंचनी साखे पाणी ग्रहण करता; अवर स्त्रीया ब्रह्मचारीहे ॥ जा० ॥ ॥ २ ॥ स्नानप्रभित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धारीहे ॥ रूपचंद समकितके लछन, ताकूं वंदना हमारी हे ॥ जा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रनातीरागमां स्तवन लिख्यते ॥

देव निरंजन नव नय नंजण, तत्व ज्ञानका दरीआ रे ॥ मति श्रुत अवधिने मनपर्यव, केवल ज्ञाने नरीआरे ॥ देव० ॥ १ ॥ काम क्रोध लोह मछर मारण, अष्ट करमकुं हणीआरे ॥ चारे नारी दूर निवारी ॥ पंचम सुंदरी वरीयारे ॥ देव० ॥ २ ॥ दरसन ज्ञान एक रस जाकुं, खीरोदधी ज्युं नरीयारे ॥ रूपचंद प्रनु नामकी

नावा, जो बेठासो तरीयारे ॥ देव० ॥ ३ ॥ इति॥
॥ अथ वर्त्तमान श्रीबाहुजिन स्तवन लिख्यते ॥

हो साहिब बाहु जिणेसर वीनवुं, वीनतडी अवधार हो ॥ साहिब नव नयथी हुं उनग्यो, हिवे मुझ पार उतारहो ॥ सा० ॥ १ ॥ सा० ॥ तुम सरिखा मुझ शिरछते, कर्म करे केम जोरहो ॥ सा० ॥ जुयंग तणो नय तिहां नहीं, जिहां वन विचरे मोर हो ॥ सा० ॥ २ ॥ सा० ॥ जिहां रवी तेजें झलहले, तिहां किम रहे अंधकार हो ॥ सा० ॥ केसरी जिहां रे क्रीडा करे ॥ तिहां नहीं गजनो प्रचार हो ॥ सा० ॥ ३ ॥ सा० ॥ तिमजो तुमें मुझ मन रमो, तो नासे दूरित संसार हो ॥ सा० ॥ वछविजय सुसिमा पुरी, राय सुग्रीव मल्हार हो ॥ सा० ॥४॥ हरण लंछन इममें स्तव्यो, मोहना राणीनो कंतहो ॥ सा० ॥ विजया नंदन मुझ दीउ, जस कहे सुख अनंतहो ॥ ५ ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवन लिख्यते ॥

वीर जिणेसर साहिब मेरा, पारन लहुं तेरा ॥ मेहेर करी टालो महाराजजी, जनम मरणना फेराहो ॥ जिनजी ॥ अबहुं सरणें आयो ॥१॥ ग

रनावासतणा दुःख मोटा, ऊंधे मस्तक रहियो ॥ मल मुतर मां हे लपटाणों, एहवो दुःखमे स हियो हो ॥ जि० ॥ २ ॥ नरक निगोदमां उप नोने चविऊ, सुक्ष्म बादर थइऊ ॥ वेचणो सुइने अग्र नागें, मान तिहां किहां रहिऊहो ॥ जि० ॥ ३ ॥ नरकतणी वेदना अति उल्लसी, सही ते जीवें बहू ॥ परमाधामीनें वस पडीऊ, ते जाणो तुमे सहूहो ॥ जि० ॥ ४ ॥ तिर्यंच तणा नव कीधा घणेरा, विवेक नहीय लिगार ॥ निसि दिन नो व्यवहार न जाण्यो ॥ किम ऊतराए पारहो ॥ जि० ॥ ५ ॥ देवतणी गति पुण्ये हूं पाम्यो, विषया रसमां नीनो ॥ व्रत पच्चखाण ऊदय नवि आव्या, तान मांनमां हे लीनोहो ॥ जि० ॥ ६ ॥ मनुष्य जन्मने धर्म सामग्री, पाम्योवुं बहु पुण्ये ॥ राग द्वेषमाहें बहु नालिऊ, न टली ममता बुद्धिहो ॥ जि० ॥ ७ ॥ एक कनकने बीजी कामनी, तेहशुं मनडुं बाधुं ॥ तेना नोग लेवाने हुं सूरो, किम करी जिनधर्मसाधुं हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ मननी दोड कीधी अति ऊाऊी, हूं ठऊं कोकजड जेहवो ॥ कलीकली कल्प में जन्म गमाग्यो, पुनर

पि पुनरपि तेहवो हो ॥ जि० ॥ ९ ॥ गुरु उपदे
शमां हुं नथी जीनो, नावि सद्दहणा स्वामी ॥
हिवे वडाइ जोइयें तुमारी, खिजमत मांहिबे खा
मीहो ॥ जि० ॥ १० ॥ चारगति मांहें रड वडी
उ, तोए न सिद्धा काज ॥ ऋषभ कहे तारो सेवक
ने, बाहें ग्रह्यानी लाज हो ॥ जि० ॥ ११ ॥ इति॥

॥ अथ नेम जिन स्तवन लिख्यते ॥

घरें आवोतो पुछुं एक वातलडी रे ॥ घरे० ॥
ताहारे ने माहारे साहेवा प्रीत घणेरी, पडिय प
टोले भांतडली रे ॥ घरे० ॥ १ ॥ तोरणथी रथ
फेर चलायो, जाणी तुमारी जातडली रे ॥ घरे०
॥ २ ॥ महेर करीने माहारे मंदिर पधारो, रहो
ने आजुनी रातडली रे ॥ घरे० ॥ ३ ॥ नेम राजु
ल दोये सरग सीधाए, मुक्ते गया नली भांतल
डी रे ॥ घरे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन,
तुमसुं बांधी मारी प्रीत लडी रे ॥ घरे० ॥ ५ ॥

॥ अथ नेम जिन स्तवन लिख्यते ॥

तोरण आवी रथ पाछो केम फेरो रे ॥ वाला
जी ॥ संयम ल्यो तो साथें अमने तेडो ॥ मारा
वालाजी ॥ उभा उभा अरज करे सहु लोकरे॥

वालाजी ॥ बोल कोल किम करीने थासे फोक॥ मारा वालाजी ॥ १ ॥ नेमजी तुमें तो लीलाना गो सार्थीरे ॥ वालाजी ॥ कीडीनां रोक्या किम रेहेसो हाथी ॥ मारा वालाजी ॥ नेमजी तुमें तो धरी रह्या एक ध्यानरे ॥ वालाजी॥ आवडला ने किहांथी आव्युं ध्यान ॥ मारा वालाजी ॥२॥ नोधारा ते केने ओथें रेशुं रे ॥ वालाजी ॥ हीय रुलाना दुःखडा केने केशुं ॥ मारा वालाजी ॥ उ दयरतनना रसीया वालम नेम रे ॥ वालाजी ॥ रा जीमतीना सीधा वंछित प्रेम ॥ मारा वालाजी॥३॥

॥ अथ अष्टापद तीर्थ स्तवन लिख्यते ॥

तीरथ अष्टापद नित्य नमीयें, ज्याहां जिनवर चोवीश जी ॥ मणिमय बिंबभराव्या भरतें, ते वंदूं निस्य दीस जी॥ ती० ॥१॥ निजनिज देह प्रमाणें मूरति, दीठडे मनडुं मोहे जी ॥ चत्तारि अठ दश दोय इणी परें, जिनचोवीशे सोहे जी ॥ ती०॥२॥ बतीश कोसनो पर्वत उंचो, आठ तिहां पावडीयो जी ॥ एकेकी चउकोश प्रमाणे, नवि जाये कोइ च डीयो जी ॥ ती० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी चडीया ल ब्धें, वांद्या जिन चोवीश जी ॥ जगचिंतामणि स्तव

न त्यां कीधुं, पूर्गी मननी जगीश जी ॥ ती० ॥ ४ ॥ तदनवमो ऊर्ध्वगामी जे मानव, ए तीरथने वांदे जी॥ जंघा विद्याचारण वांदे, तेतो लब्धिप्रसादें जी ॥ ती० ॥ ५ ॥ साठ सहस सुत सगर चक्रीना. ए तीरथ सेवंता जी ॥ बारमा देवलोके ते पोहोता, लहेशे सुख अनंता जी ॥ ती० ॥ ६ ॥ कंचनमय प्रासाद इहांछे, वंदन करवा योग्य जी ॥ ए अधिकार छे आवश्यकसूत्रें, जो जो दइ उपयोग जी ॥ ती० ॥ ॥ ७ ॥ जिहां आदेसर मुक्तें पोहोता, अविचल तीरथ एह जी ॥ जशवंतसागर शिष्य पयंपे, जिनेंद्र वधते नेह जी ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र जगवानको स्तवन लिख्यते ॥

आराधो प्राणी साचि नवपद सेवा ॥ ए आंकणी ॥ ॥ नव निधि आपे नवपद सेवे ॥ इम जाखें श्रीदेवा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र धरो नित दिल ॥ जेसें गज मन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक एक पद जपतां ॥ हां रे लहीयें सुख सदैवा ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुदित जपतां किमकरी नकरें ॥ सुरसुख द्रुम फल लेवा ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिनेंद्र ज्ञान विनोद प्रसंगे ॥ हरषितथ्यो नित मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥ समाप्त

जैन धर्म संबंधी छपेला पुस्तकोनुं सूचीपत्र

१ जैन धर्म ग्यान प्रदीपक पुस्तक किमत ५॥ रुपया.
२ श्री जैन धर्म सिद्धांत सार पुस्तक किमत १। रुपया.
३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किमत १२ आणें.
४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किमत १। रुपया.
५ चंद्रराजाको रास किमत १ रुपया
६ लक्ष्मण बोध नाटक किमत १२ आना
७ श्रीपाल राजाकोरास चार खंडको किमत १० आणें.
८ अंजनाको तथा राणी पद्मावतीको रास किमत ०६ आणें
९ मानतुंग मानवतीकोरास किमत ०६ आणें.
१० हंसराज बछराजको रास किमत ५ आणे.
११ सतधारी राजा हरीचंदकी चोपाई किमत ४ आणें.
१२ धन्ना साळभद्र शेठकी चोपाई किमत ४ आणें.
१३ मंगळ कळसकी चोपाई किमत ४ आणें.
१४ देवकी राणीको रास (छ भाइनो रास) किमत ४ आणें
१५ लिलावती राणीकी चोपाई किमत ४ आणें.
१६ अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किमत ४ आणें.
१७ चंदन मलीयागीरीकी चोपाई किमत ४ आणें.
१८ परदेशी राजाको रास किमत ४ आणें.
१९ कयवन्ना शाहको रास किमत ४ आणे.
२० महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किमत ४ आणें.
२१ कांनड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंधन रास किमत ०४ आणें
२२ स्नात्र पूजा तथा वीस स्थानकनी पूजा किमत ४ आणें
२३ स्तवन सझाय संग्रह प्रत्येकभाग किमत ०४ आणें
२४ मेणरहयानी चोपाई किमत ३ आणें.
२५ पांचपदारी मोठी वंदना किमत ३ आणें
२६ पंडित देवचंद्रजी कृत चोवीसी किमत १॥ आना
२७ पंडित आनंदघनजी कृत चोवीसी किमत १॥ आना
२८ श्री जैन धर्म काव्यमाला (आठ भाग) किमत १ रुपया.